GOSSNER EVANGELICAL – LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM

GELC ARCHIVE

Signature: **GELC-A _ 001 _ 0648**

Classification:

Original File No: 10

Title

Joint Mission Board "Prachark"

Volume:

Running **from year:** **1963** **till year:**

Content:

- Self declaration of the life skefehes of Persons (Applications) Called for Pracharak Director J.J.P.Tigga – 1962-63.
- Bulletin "Pracharak" copy Sept. 1962 and March. 1963.

"Pracharak" 5

(10)

Director,
JOINT MISSION BOARD,
G.E.L. Church, P.O. Chaibasa,
Dist. Singhbhum, (Bihar).

Minar
OFFICE FILE

1963

OFFICE RECORD FILE

File No. 10

Name

Address

Subject JOINT MISSION BOARD
Reports for Bulletin

Serial No. to

From to

Year 1963

5

Life Sketches

26.50
1.22
27.72 × 2
55.44
5.50
60.94

जे: एम: बी: प्रचारक - योशुआ समद बोदरा॥

(जीवन चरित)॥

कोरोंजो सिरबोद, खूंटी जिला का एक छोटा गांव डड़कापानी का यूसफ नाग एक गरीब व्यक्ति का पुत्र हूं। 1921 ई: में जन्म हुआ था॥ पिताजी मछली बेचके कर पालन पोषण किये। 10 वर्ष के उमर में स्कूल में बैठना शुरु कर गांव ही में 3रा पास किया। बाद में मैं बांसजोर में पढ़ने को होके 6वां वर्ग तक॥ तक बैठने सका। वहां से निकल कर, टेरन खदान में काम करने लगा। स्ट्राईक होने से अपना जन्म स्थान छोड़ना पड़ा। गिर्जे में बिना अनुमति घर में बैबल का ध्यान करने में जोश हुआ। दुरंग पुथी पढ़ने, बेदी के सामने जाता था॥ कुछ दिन बाद ईश्वर ने स्वाबल द्वारा अपना बगान में काम करने को बुलाये॥ और मैं उसके पीछे जाने में कदम बढ़ाया। उसी समय उड़िसा शिबोद के जूनाई पेरी में ईश्वर के आत्मा के चलाने से 1946 साल में प्रभु का काम प्रचार के साथ करना पड़ा॥ छोटा गांव बेतरकराइ मंडली की दशा देख कर, और जंगल झाड़ देख कर मैंने रोया॥ क्योंकि शरीर को नष्ट करने वाले और मंडली के अपना घात वाले बैरियों से मुझे आत्मिक सामना हुआ॥ मंडली के मसीही भाई बहनों को वहां के मुख्या जातों ने मूर्तों के सामने चढ़ाया हुआ पूजा मांस आदि खिलाते थे। बिधी अनुसार सहारा के साथ ना खाने की सलाह मना जारी किया॥ यह जारी देख कर गांव के सब लोग क्रोधित होके लड़ने को एक इच्छा किये। और मैं मंडुल पाली थाना में भेज दिये। मैं भी राज्य गंगपुर पोलिस हैड साहेब को खबर दिया॥ मुझे शान्ति के शब्द पोलिस से मिली। बिना डर जेल जाने को अपना हथियार साथ तैयार हुआ॥ चार पुलिस आके थाना ले चले, थाने दरोगा के सामने खड़ा होके राज्य नेम और धर्म बिषय सवाल किये। जैसा आत्मा चलाया मैंने ठीक २ जवाब दिया॥ दरोगा कोई दोष ना पाके प्रसन्न हुए॥ और मुझ को छुटी मिली। हप्ता के अन्दर ऐस: पोलिस हैड आ गये॥ पोलिस को देख कर गांव के सब लोग डर गये। मेरा सहारा बढ़ गया॥ और प्रचार करते दौड़ धूप किया॥ सब संकट दूर हुआ और बेपरवाह काम किया॥ 1952 ई: में जे: एम: बी: होने में काम करने को हाथ लगाया॥ आज्ञा ग्रहण कर अपना बिशप्ता उबार के देओगढ़ में डेरा डाला॥ और आस पास के टोलों में वन पशुओं के सामना करते हुए प्रभु का जीवन बचन प्रचार किया॥ उसी समय देओगढ़ से ठटार कोस के जंगल में जहां 10 मील का घना जंगल में हाथी से मुलाकात हुई॥ उसे बचने की कोई उपाय सूझ ना पड़ा॥ मैं दो मिनट तक बिन्ती किया॥ ईश्वर ने उस भयंकर जानवार को हटा दिया॥ जेठ का मास था, प्यास से और भूख के कारण व्याकुल हो गया था॥ तो भी मेरा मन पीछे हटने में कमजोर ना बना। बल्कि इच्छा पुरा कर आगे बढ़ा॥ और लाईपुरा इलाके में बचन प्रचार किया॥ और सोरोडीह में चार पांच घर का एक मंडली स्थापित हुआ॥ बाद में एम: बरला साहेब के रक्षा ले आप गांव के गये। सोरोडीह में प्रचारक पो: बरला को रख छोड़े॥ ईश्वर के आत्मा के चलाने से रेभ: एम: बरला साहेब 1953 ई: में शिक्षा के लिये 3 महिना बुलाये। प्रति वर्ष 3 महिना के हिसाब से 1953 ई: से 1956 ई: तक एम: बरला ने चाईबासा में शिक्षा दिये॥ रेभ: एम: बरला के बाद स्वतंत्र होने से अपने देश जर्मन वापस लौटे। जब और सिंहभूम के सब प्रचारकें हजीर थे॥

कुछ दिन के बाद प्रचार करते २ हम तीन जन कुचिण्डा सबडिवीजन पहुंचे॥ कुशमी
थाना के बोड़ मुण्डाटोली गांव शाम को पहुंचे। जहां ईश्वर का वचन नहीं पहुंचा था।
हमारे बात सुन के लोग अचम्भित हुए। गऊन्टिया के हुक्म से गांव का चौकिदार
एक लेकोंग को बुलाये और हम को मार भगाने के लिये घेर लिये॥ गऊन्टिया के सामने
हम को पहुंचाये, गऊन्टिया एक बड़ा और नामी मनुष्य थे॥ घर दो महल बनाया गया है।
सवाल जवाब के बाद हमने उड़िया मसीही गीत पुस्तक उस को दिये, कि हम इसी
को प्रचार कर रहे हैं॥ तब प्रचार करने का छुट्टी मिली॥ रात भर हम को चौकी-
दार पहरा किये॥ हमें कुछ डर नहीं करते थे, क्योंकि हमारे ऊपर कुछ दोष नहीं पाये॥
दूसरे दिन बिना खाये मैं दो जनों को आगे कुचिण्डा ले के गये॥ धूप काल का दिन
था। भूख प्यास से शरीर दुःख बढ़ गया, 6 बजे शाम को रास्ते का भेद न जाने से-
हम खो गये। जंगल पार होने से एक छोटा गांव जहां अन्य जातियों के घर थे,
मिल गये। वे भी हम को देख कर डर गये, सोने का जगह नहीं मिली अब
उपाय नहीं कि हम क्या करें॥ एक लोटा पानी से हम तीनों के प्यास बुझाये॥
चांदनी रात थी, हम आगे बढ़ गये जंगल को पार करने से फिर एक उरांव भाई
का घर मिला, वह मसीही भाई हमसे खुशी थे: भूख दुःख सब हम भूल गये॥
अब मैं तीनों में अलग होके बपतिस्मा की ओर कदम बढ़ाया। प्रचार करते हुए एक
छोटा गांव बोड़राया में आ निकला॥ प्रचार करते कुछ रोक छेड़ नहीं हुआ॥ ईश्वर का
सत्य वचन सुन के १६ पुरुषों मसीह को ग्रहण किये। मैं आनन्द के साथ बपतिस्मा
के लिये तैयार किया॥ उन के बपतिस्मा Rev. J. Topno द्वारा हुए॥ इस प्रकार
से बोड़राया में एक छोटी मंडली स्थापित हुई॥ मैंने तुरन्त एक गिरजाघर
बनाया। तीन चार बरस के बाद अन्य जाति हिन्दुओं ने, सत्य प्रभु का वचन
सुनाने के कारण हमारे ऊपर छेड़ छाड़ शुरू किये। नये विश्वासियों को बिगाड़ने
लगे। धर्म प्रचार करना मुझे बन्द किये, पर ना मान के अधिक जोर करने
ठान लो:। वे क्रोध से जल गये, और गिर्जा घर को ढा देने की
धमकी दे थे॥ एक दिन ऐसा हुआ, ११ बजे रात को बैरियों ने आ के मेरा
घर घेर लिये। मुझे नींद से जगाये। सवाल जवाब करने लगे, गिर्जा
घर गिराने को ग्राम सेक्रेटरी आज्ञा दो: मैं उन को कुछ रोक न किया-
क्योंकि मैं अकेला था। सब मसीही भाईयों को पकड़ के मार पीट कर भगा
दिये। घर को ना गिरा के मेरे ऊपर टूट पड़े। बचके अब रास्ता कहां पाऊं,
मैं छोटे रास्ता पार कर घर के अन्दर कूद पड़ा। और किवाड़ बन्द किया।
बैरी ना मान के दरवाजा को तोड़ कर घुस गये॥ यीशु का सताहट मन
में याद हुआ, मैं उन के ऊपर कोई हथियार नहीं चलाया, मैं सह के रह गया॥
सब तरह का हथियार मौजूद था, तीर धनुष, गुपती, लाठि, वर तांगी आदि से
सह लिया॥ कितने मजदूर मसीही भाई बहनों ने रातों रात जंगल पहाड़ होके
भाग गये॥ बात खबर तुरन्त ही Rev. H. Saund को खबर दिया गया।
मैं अपना परिवार साथ बिश्रामपल्लि में रहने लगा॥ कुछ दिन बाद -
Rev. J. Soy. दौड़ के आये, मेरा दुःख तकलीफ देख कर फिर लौट गये।
बैरियों ने अपना घर को दखल कर सरकारी मास्टर को डेरा दिया दिये॥
मैं थाना पुलिस जाके रिपोर्ट दे दिया। पुलिस दरोगा तुरन्त आके-
जांच किये। और मास्टर को घर से बाहर निकाल दिये॥ गांववालों
को उन के मुंह बन्द कर खूब जोर से धमकी दिये। और ऐसा डांटा कि
यदि आगे अत्याचार करोगे तो मैं बिना पूछे जेल में ले जाऊंगा।
यदि दूसरी बार कोई केस हो तो बोड़राया को क्या हाल बनाऊंगा॥ वह भर
अभी मैं बेफिक्र आनन्द के साथ प्रचार कर रहा हूं। मेरा शरीर इतना
काम पाने से भी प्रचार करने में लौलीन हूं। और प्रभु मसीह मुझ को नहीं
छोड़ा, और आगे भी मेरा रक्षा करे॥ (आमीन)

G. E. L. Church Jagnathpur
11-2-63.

श्रीमान डैरेक्टर साहेब
Rev. J.P. Tigga J.M.B.

महाशय; महा मान्यवर

१९६२ के प्रचारक शिक्षा क्लास्स के समय आप बोले थे कि, अपना २ जीवन-चरित्र लिख कर फरवारी महिने तक भेज दीजिए बोल कर। सो मैं अपना जीवन-चरित्र संक्षेप से लिख कर भेज देता देता हूं।

आप का आज्ञाधीन
Br. Simon Dang
G. E. L. Church Jagnathpur
11-2-63.

जीवनचरित्र।

मेरा जन्म १७-१०-१९१८ ई० को, कोरोंजो सिनोद, लोम्बोई पेरिश के मामाभगिना गाँव (मराडली) में हुआ था। मैं गांव ~~का~~ (मामाभगिना) में १९३१ ई० एल० पी० स्कूल पास कर के १९३२ ई० में बरैबेड़ा यू० पी० स्कूल में बहाली हुआ। दुःख में पड़ने के कारण १९३२ में ४था क्लास का इमतिहान नहीं लिख सका। इस कारण ४था क्लास में मुझे दो बर्ष रहना पड़ा। १९३४ ई० में मैं बरैबेड़ा का यू० पी० पास कर लाचार बश स्कूल छोड़ दिया। स्कूल छोड़ कर मैं जब घर में था तो कभी२ सन्डे स्कूल वो गिर्जा में भी प्रचारकों को सहायता करता था। मेरे पिताजी भी १९२४ से १९५८ फरवारी तक प्रचारक का काम किये। कभी२ मेरे पिता के साथ प्रचारकों की महवारी बैठकीमें मैं जाता था। और बैबल पाठ की शिक्षा दीई जाती थी उस को मैं ध्यान से सुनता था, ओ अन्य२ बातों को भी ध्यान से सुनता था। मैं १९४५ में बिश्रामपुर खदान में काम पकड़ा था, और डेढ़ बर्ष तक खदान में काम किया। मेरी इच्छा पहले ही से प्रभु के दाख–बारी ही में काम करने की इच्छा थी। इसे मैं पिता जी से सलाह ले ~~कर~~ कर प्रचारक काम के लिये १९४८ ई० में ओड़िस्सा मिशन क्षेत्र में अर्थात रेभ० जे० क्लीमकैट के हाथ अर्जी दरखास्त पेश किया। १९४८ में प्रचारकों की जगह न रहने के कारण उस साल मैं राजगंगपुर पेरिश के बरगड़ा मराडली में मास्टर का काम किया। १९४९ में प्रचारक काम करने की जगह ओड़िस्सा, सम्बलपुर, बामड़ा स्टेट के टंगरपाली नाम गाँव में जगह मिला। रेभ० जे० क्लिमकैट की अनुमति से प्रचारक शिमोन कुजुन द्वारा १९४९ के १९ मार्च में मैं प्रचारक काम के लिए बहाल किया गया। और काम आरम्भ किया। टंगरपाली में १९५८ के १६ वें फरवारी तक काम किया। फेडेरेशन से चर्च कौन्सिल की ओर से महिना १६) रु पावना मिलता था। पावना १ बर्ष ४ महिने तक न मिलने के कारण काम सम्भालने की कोई उपाय नहीं सूझा। इसे मैं बामड़ा खरिया मिशन क्षेत्र के पादरी जे० तोपनो से स्तीफा छुट्टी मांग कर घर (मामाभगिना) लौट गया। पर मुझे प्रचारक काम करने की से ही इच्छा थी इसे घर में ५ महिने तक रह कर फिर जोइन्ट मिशन क्षेत्र में दरखास्त पेश किया, अर्थात रेभ० एच० बरुता के चले जाने पर रेभ० एच० क्लोस्स के पास, रेभ० जे सोय द्वारा भेज दिया। और दरखास्त तुरन्त मंजूर हुई। इसे मुझे फिर प्रभु के दाखबारी में काम करने के लिए पादरी जे० सीय के द्वारा बुलाहट हुई, और १९५८ के ३ अगस्त से फिर प्रभु के दाखबारी में काम के लिए ओड़िस्सा के प्रान्त सम्बलपुर जिला के कुलपाल गांव में आरम्भ किया। कुलपाल से ~~के~~ जोइन्ट मिशन बोर्ड के डैरेक्टर रेभ० जे० जे० पी० तिग्गा की ओर से मेरी बदली की चिट्ठी मिली। और ६-१०-६२ को कुलपाल छोड़ा।

[२३ पृष्ठ में इसका लगातार है।]

१०-१०-६२ को मेरी बदली जगह अर्थात सिंहभूम जिला के जगन्नाथपुर गांव में परिवार सहित पहुंचा। और १४-१०-१९६२ को प्रचारक बाबू आमूस आइन्द द्वारा जगन्नाथपुर मण्डली का जिम्मा ले कर अब तक प्रभु का काम करता हूं।

प्रचारक - शिमोन हांग
जी. ई. एल चर्च जगन्नाथपुर (डाक घर)
जिला सिंहभूम।
११-२-१९६३।

प्रचारक आन्तोनी सोय का जीवन चरित्र।

मैं अथवा आन्तोनी प्रचारक का जन्म सन १९१२ ईस्वि के १५ जून को हुआ था। मेरा बाप का नाम गाब्रियल और मा का सारा थी। मेरा बाप अनपढ़ थे ये पांच भाइयों में मुझला बेटा था। वह अपने भाइयों में बलवन्त और नीडर भी था, भालुओं से लड़ाई भी किया था। पांचों भाइयों में से छोटा बेटा पुमुदेगा (मेरा चाचा) हमारे गोसनार्स स्कूल रांची में मिडिल तक पढ़ा था। पर नराज की बात कि शादी होने के दो वर्ष बाद देहान्त हुआ हमारे बाप पहले सोमन स्थान थे, वे बड़े जुलुम्ब से गिर्जा जाते थे। एक समय वे बहुत दुःख के समय में पड़ गये थे। जिसके कारण मर भी गये, ऐसी दशा में वे विशाप साहब को बुलाये। जब दुःख दुर नहीं होता था तो विशाप साहब कहे कि पूजा पाठ करने से भी बनेगा, यह सुन कर हमारे बाप दादों ने कहे कि पूजापाठ छोड़ के तो हमलोग ओ स्थान हुए हैं, फिर हमको सहेब पूजा करने बोलता है सो वे पीछे लुथेरान धर्म में उलट गये। मैं ६ वर्ष के उमर में उम्बुलबाहा स्कूल में स्कूल शुरु किया। बचपन समय स्कूल में मेरा उतना ध्यान और खुसी नहीं था, इस लिये बार २ गांव भगता था। परन्तु मेरी मा और बाप मुझ को जुलुम्ब से स्कूल ले जाते थे, इसी कारण से मा से मुझे मार भी मिला। जब तीसरा क्लास पास किया तो मैं पूरा मन से पढ़ने लगे।
१९२८ ईस्वी को यू० पी० पास किया, आगे पढ़ने की इच्छा तो थी पर मेरा बड़ा भाई और बाप के बीच अनबन मच गई, इस कारण मैं स्कूल बास किया। स्कूल बास कर काम करने के लिये टाटा नगर मेरा भाई के पास गया। पर एक हप्ताह रहने से भी काम का ठीका ना नहीं हुआ, इसलिये मुझ को फिर गांव लौटना पड़ा, उसके बाद चक्रधरपुर में थोड़े दिन कनियुस का मुंशी काम किया उसमें भी मुझ को अच्छा नहीं लगा, फिर खुंटी में कपड़ा बुनाई काम में गया उस समय मेरा पिता का देहान्त हो गया ऐसी हलत में मुझ

को घर का पूरा काम देखना पड़ा २ वर्ष के बाद मेरी माता भी मर-गई। अन्त में मैं फिर १९३५ ईस्वी को प्रचारक काम का दरखास्त दे दिया, दरखास्त मंन्जूर हो कर पहले पहल उम्बुलबाहा पेराबा के कुड़ुम्बा दा: मंडली में काम आरम्भ किया। मेरा शादी १९३६ ईस्वी में बिरहू के फुलारी संगा से हुई। काम करते २ बदली इस प्रकार हुआ जैसे – कुड़ुम्बा दा: से जम्बोराबेड़ा मंडली, वहां से चिरुंग, और चिरुंग से मलुवे, वहां से सिंहभूम जिलों के बोंगा जांगा मिशु फिल्ड में १९५४ ई में हुआ। और वहां से १९६० ईं० में होरो मिशन फिल्ड में काम कर वर्तमान में १९६२ ईस्वी के १ ला फरवरी से कुकुरी कोचा मिशु फिल्ड में काम कर रहा हूं॥

मेरा जीवनी

मेरा गांव साचो पेरिस के विश्रामपुर मंडली मे है नाम दिग्री है। वहीं मेरा जन्म हुआ। मेरे मातापिता का नाम बाबा का जयमसीह तोपनो है और मां का प्यारी। वे गृहस्थी काम करते हैं। मैं अपने बाबा का लड़को मेसे तीसरा लड़का हूं मेरा जन्म १९२० मे हुआ और बपतिस्मा घर ही मे हुआ। मेरा पुरा नाम विक्टर उज्वलन प्रभुसहाय तोपनो है। मैं विश्राम पुर र०ल०प्र० स्कूल मे विद्याध्यान शुरु किया। वहां लोअर प्राइमरी स्कूल पास कर। गोविन्दपुर मिड़ल स्कूल मे पढ़ने के लिये मुझे पिता जी ने भेजा वहां पांच वर्ष रह कर मिड़ल पास कर आगे पढ़ने की चेष्टा किई पर घर की खराब हलात के कारण आगे नहीं जा सका पर घर ही में पिता जी के साथ घर का काम करने लगा १९३९ ई० मे शादी ही के मुझे नौकरी की अभिलाषा हुई। और उसी साल मैं नौकरी जंगल विभाग मे काम करने के लिये मैं पहिले पहेल सिंहभूम जिला आया। और करीब साढ़े चार बरस जंगल विभाग मे काम किया पीछे १९४४ के अप्रैल महीना मे मैं घर लौटा और वही महीना से मंडली मे प्रचारक का काम करना शुरु किया पहिले चुरघा पेरिस मे काम करता था वहां से १९४८ मे गुमला प्रचारक ट्रेनिंग के लिये कलीसिया ने मुझे भेजा और २ बरस रह कर और फिर उसी पेरिस मे ट्रेनिंग से निकल का काम किया। मुझे मिशन क्षेत्र मे काम करने का बड़ा अभिलाष था इस लिये फिर मैं मिशन क्षेत्र मे काम करने के लिये आया

१९५४ को मिशन क्षेत्र में आया और नकटीमें अपना
काम अक्टोबर से शुरु किया। वहां से १९६० में मेरी
बदली बंगाल मिदनापुर के जिलाके चुड़ना सोलमें ~~हुई~~
मंड़ली में काम कर आयी वहां से भी मेरी बदली १९६३
मेंरुला जनवारी से मेरी बदली जराईकेला पकडीह
में हुई वहीं आयी मिशन का काम कर रहती हूं।

लिखत पु० प्रभुसहायतोपनो
पकडीह
पो० ओ जराईकेला।
सिंहभूम

मेरा जीवन चरित्र:- Life Sketch

मैं ख्रिस्त बिलकानी सुसाना बुढ़ मौजा पोगलोया थाना कोलेबिरा सब डिविजन सिमडेगा जिला राँची की रहने वाली हूँ

तथा जी० ई० एल० चर्च के ख्याल से पोगलोया मराङलो प्रचारकपन बड़ी किरींगा पेरिश टकरमा सिनोड दक्षिणी पूर्वी अंचल की रहने वाली हूँ।

ता:२८-३-१९३९ई० को मेरा जन्म पोगलोया मे हुई थी। ता: १९५६ ई. को ई० आई० पी० प्रा० मा० मिडिल स्कूल से सातवाँ वर्ग की परीक्षा पास की हूँ। मैं एक अनाथ और (टुवार) लड़की हूँ क्यों कि १९४५ ई० मे मेरे पिताजी पतरस बुढ़ की मृत्यु हुई तथा १९६१ ई० को मेरी माता ख्रिस्त सुसारी बुढ़ की मृत्यु हुई। हमलोग चार भाई बहिन हैं। गरीबी के कारण मुझको ऊपर वर्ग के लिए नहीं भेजे इस पर मैं घर ही में काम कर रही हूँ।

स्कूल छोड़न के बाद मैं १९५६ ई० को दूदी करगा बड़ी-किरींगा में ली हूँ। स्कूल के बाद से मैं सराइ स्कूल युवा-संघ तथा विश्रामवार को गीत पढ़ने का भाग भी रही हूँ। इसके शिवा मैं कलीशिया या मराङलो मे काम करने को मुझे अति लालशित हूँ तथा मेरे घराने के लिए भी काम करने को मैं इच्छुक हूँ।

१९६२ ई० को मेरी शादी होने वाली है जो की जोईंट मिशन फिल्ड में प्रचारक काम कर रहे हैं। वह भी १९६२ई० को गोविन पुर ट्रेनिंग जाने वाला है। इस पर मैं भी अपने जिव जीवन के लिए धर्म शिक्षा पाने के लिए गोविन्पुर जाने चहती हूँ

धर्म धर्म शिक्षा से मुझको अति जरूरी है

जिससे मैं भी अपनी अचंल के कामो मे हाथ बटा सकू

लि: बिलकानी बुढ़

आवेदन-पत्र ।

सेवा में,

सुश्री प्रधानाध्यपिका,
तबीता बैबल और बुनियादी प्रशिक्षण विद्यालय,
गोबिन्दपुर भाया खूंटी, राची, बिहार ।

महाशया,

मैं कलीसिया की सेवा करने निमित्त आपके प्रशिक्षण विद्यालय की प्रवेशार्थिनी हूं। मैं प्रतिज्ञा करती हूं कि प्रशिक्षण अवधि में विद्यालय की शिक्षाधीन और नियमाधीन रहूंगी। प्रशिक्षण समाप्त होने पर अधिकारियों के अधीनता में कलीसिया के शिक्षा अनुसार ईश्वर का निर्मल बचन का प्रचार करूंगी ।

प्रवेशार्थिनी की सही ।
ख्रिस्त बिलकान्ती सुसाना बुढ़

१ लड़की का नाम — ख्रिस्त बिलकान्ती सुसाना बुढ़ ।
२ पिताका नाम — मृत पतरस बुढ़
३ लड़की का उम्र — २८-३-१९३७ ई०
४ पूरा पता — गाँव-पोगलोया, लचड़ागढ़ पोस्ट राँची जिला ।
 १ गांव — पोगलोया
 २ डाक — लचड़ागढ़
 ३ जिला — राँची
 ४ प्रचारकथल — पोगलोया
 ५ पेरिश — बड़ीबिरिंगा
 ६ इलाका — टकरमा
 ७ सिनोद — टकरमा
 ८ अंचल — दक्षिणी पूर्वी आंचल
५ किस स्कूल में पढ़ी? — पोगलोया ई० आई० पी० पु० मा० विद्यालय ।
६ किस कक्षा तक? — सतवाँ वर्ग
७ किस स्कूल से निकली? — टकरमा एड ऐस हाई स्कूल ।
८ किस कक्षा के उत्तीर्ण होने का प्रमाण-पत्र है? — सतवां वर्ग ।
९ तबीता स्कूल में किस विभाग में सीखना चाहती हैं? — मंडली सेविका ।
 (क) घरेलू क्लास — (ख) मण्डली सेविका —
१० आप किस मतलब से इस स्कूल में पढ़ना चाहते हैं? — अपने जीवन के लिए धरने के लिए तथा कलीसिया के
११ किस प्रकार का काम मण्डली में आपने किया? — सण्डे स्कूल युवा संघ बराबर जाती थी
१२ दृढ़ीकरण कब और कहां हुआ? — १९५६ ई० में बड़ीबिरिंगा पेरिस में ।
१३ प्रचारक की सिफारिश — Recomended M. A. Kandulna 8/12/62
 (क) चालचलन — अच्छा है।
 (ख) स्वास्थ्य — ठीक है (निरोग)
 (ग) मण्डली की दिलचस्पी — गिर्जा आने जाने में बराबर शामिल रहती है।
 (घ) पढ़ने की दिलचस्पी — दिलचस्प है।
 (ङ) धर्म ज्ञान — प्रायः ठीक है।
१४ पेरिश पादरी की सिफारिश —
 सही — Recommended. M. Toro
 ता० — 8/12/62.
१५. इस आवेदन-पत्र के साथ निम्न प्रमाण-पत्रों का नकल भेजना आवश्यक है। स्कूल में बहाली होने के समय असली प्रमाण-पत्रों को दिखाना पड़ेगा —
१ स्कूल transfer certificate —
२ चाल-चलन सार्टिफिकेट —
 (क) १ला पंच — निर्मल बुढ़ ८-१२-६२
 (ख) २रा पंच — फूरा प्रसाद मंत्री ८-१२-६२
३ बप्तिस्मा और दृढ़ीकरण —

नोट —

इस आवेदन-पत्र के साथ प्रत्येक प्रवेशार्थिनी को चाहिये कि कम से कम ३० या अधिक से अधिक ४० पंतियों में अपना जीवन-चरित्र अपने हाथों से लिख भेजें। उसके न होने से आवेदन-पत्र पर बिचार नहीं किया जायगा ।

जीवन चरित्र

जोहानेस कुमार हेमरोम गाँव डुमीरता — ता: २२-२-६३

मेरा जन्म डुमीरता गाँव में हुआ। मेरे माता पिता अन पढ़ थे। इस लिये मैं अपना जन्म तारीख, महिना और साल को नहीं जानता हूँ। मेरे माता पिता गृहस्ती का काम करते थे। मेरे पिता जी हिन्दी स्वर्ण वर्ण और व्यञ्जन वर्ण अक्षर ही को अकेला पढ़ सकता था। इस लिये मुझ को बचपन में इतनी ही अक्षर को घर में पढ़ाया था, और अपने साथ बैल बकरियों को चराने ले जाता था। जब वह गृहस्थ का औजार बनाता था तो मैं केवल देखता था, पकड़ने नहीं देता था। जब मैं कुछ बड़ा हो गया तो हाल चलाने को सिखाया। अब मेरा काम केवल बैल बकरी चराना और हाल चलाना ही मुख्य रहा। लाग भाग जब मैं २० वर्ष उम्र तक का हो गया तो मुझ को शादी कर दिया। दुसरी वर्ष ही से मैं एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ने को जाना शुरु किया। दो ही वर्ष में मैं तीसरा क्लास किया। बाद को मैं जी. इ. एल मिशन स्कूल कोरीमाटी में भरती हो गया। करीब १९२६ ~~अक्ष साल~~ में ६ वां दे कर स्कूल से निकल गया। मैं घर ही में किसनाइ का काम करने लगा। उस समय मैं बहुत नशा पीता था।

ता: १-५-१९३५ से मैं फोरेस्ट गार्ड का काम करने लगा। हम भाई भाई में अलग हो जाने के कारण से मुझ को १९४१ के फरवारी महिना में नौकरी को छोड़ना पड़ा। नशा के जरिये लिखना पढ़ना भी भूल गया और याद शक्ति भी खो गया। मैं बहुत ही गरीब हो जाने के कारण चिड़िया लोहा खान में कुली काम करने लगा। कुछ दिन के बाद मेरे क्लास मित्र के द्वारा से मुझ को मुन्सी काम मिला। गृहस्थ काम का समय पहुँचने के कारण से १० ही महिना में मुझ को नौकरी छोड़ना पड़ा। उसी समय १९५३ इस्वी में मैं खिस्त को ग्रहण किया। ~~१९५~~ ता: १५-६-१९५८ को जोइन्ट मिशन बोर्ड में प्रचारक का काम मुझ को मिला। मुझ को इस काम में बहुत ही आनन्द लग रहा है। मैं इस काम को जीवन भर सारे मन तन से करने चाहता हूँ।

प्रभु इस काम में मुझे सहायता करे आमीन ॥

मैं प्रभु का यीशु मसीह का दास

जोहानेस कुमार हेमरोम

गाँव डुमीरता पो. ओकिया भाया मनोहरपुर

जि: सिंहभूम - बिहार

ता: २२-२-६३

मैं कैसे ख्रिस्तान हुआ

मैं समझता था कि ख्रिस्तान लोग मनुष्यों के गिन्ती से बाहर हो गये हैं वे बिगड़ गये हैं। इस लिये मैं उन के हाथ से तमाखु खाने तक छिपा करता था और नहीं खाता था। मेरे गाँव के निकट कासीजोड़ा गाँव में एक ख्रिस्तान भाई अब्राहम लुगुन कुर्ताबेड़ा का एक प्राइवेट स्कूल खोला। विद्या के लालच से मैं उस स्कूल में पढ़ने के लिये गया। डेढ़ ही बर्ष में वह मास्टर स्कूल को बन्द कर के छोड़ दिया। तब मैं जी. ई. एल मिशन स्कूल कोटिमाड़ी को गया। वहाँ धर्म विषय ज्यादा पढ़ाई होती थी। मेरे गाँव के आस पास कोई स्कूल नहीं था। मैं विद्या पाने के लोभ से खूब पढ़ता था। धर्म विषय में १०० पुरा अंक में ८० तक नम्बर पाता था। मैं पुराना नियम में पाया कि ईश्वर मनुष्यों पर कैसा काम करते आया है। इस से मेरा मन छिद गया। ऐसे कहानियों को मैं अपना मन में रख लिया। स्कूल से निकल कर २६ बर्ष लौं अपना सरना पुजा धर्म में, हिन्दु धर्म में, मुसलमान धर्म में और कबीर पन्थ धर्म में मन ही मन जाँच कर के देखा तो कहीं भी आदि और अन्त मूल और सार नहीं मिला। उस समय मैं भूतों का पुजा पाठ करने में खूब लौलीन था। एक समय ऐसा हुआ कि एक तरफ मैं अकेला ही तसर लगाया और दुसरे तरफ मेरे पिता जी और गाँव के सब लोग तसर लगाये। मेरे पिता जी सोखा भी था। मैं गंजा मिठाई और मुरगी सब को पुजा किया। उन लोग बकरा भेड़ा और सब कुछ पुजा किये। तिस पर भी मैं ही ज्यादा उपजाया। और गाँव में कोई बीमार हो जाय ~~और~~ तो मेरे पिता और दुसरे लोग बकरा बिना अच्छा नहीं होगा कहेंगे तो मैं मुरगी ही सब पुजा कर के और दवा इत्यादि दे कर रोगी को अच्छा करता था। इस से मैं अपने को बड़ा बहादुर समझता था। फिर मैं दुसरी तीसरी साल भी तसर लगाया तो कुछ भी नहीं उपजाया तो मैं सोचा कि भूतों के पास धन का खजाना नहीं है और न ईश्वर के समान शक्ति है। केवल ईश्वर के पास ही सब कुछ है और जो चाहे सब कुछ कर सकता है। और जब मैं खलिहान में धान मिसता था तो एक तरफ अच्छा धान गिरेगा तो दुसरी तरफ कमती गिरेगा. कितना भी पुजा करने से भी नहीं बनता है। इस से मैं समझा कि भूत सब चोर हैं और धोखेबाज हैं। कुछ दिन के बाद मैं बहुत गरीब हो गया, गरीबता के कारण बैलों को भी ले कर चिड़िया लोहा खान कुली काम करने को गया। थोड़े ही दिनों में क्लास

मित्रों के द्वारा से मुन्सी का काम मुझ को मिला। नौ महिना हो तक में मुझ को छाती दर्द का बीमार पकड़ा। पांच दिन तक मैं हौसपीटल में दवा खाया लेकिन मुझे चैन नहीं लगा। इस लिये मैं डाक्टर से छुट्टी ले कर घर को आया, तो घर में भी मुझ को देख ताक करने वाले कोई भी नहीं रहा। मेरे बेटी लोग और घर वालों को छोड़ कर। एक दिन ऐसा हुआ कि रात को ९-१० बजे खा पी कर सो गये तो मैं एक सफेद चीज को मेरे दाहिनी तरफ में देखा। जो राई के दाने के बराबर था और वह धीरे धीरे बढ़ते बढ़ते बहुत बड़ा हो गया और मुझ को ढांप लिया। और मेरे शरीर पर दो इंच तक नहीं पहुँचा था। तौ भी ~~मुझ को~~ मैं इतना वजन मालुम किया कि स्वास भी बन्द हो जाने के जैसा लगा। तब मैं ईश्वर को याद किया कि उस के बिना कोई इस चीज को मुझ से दूर करने नहीं सकेगा। इस लिये मैं ईश्वर ही को बिन्ती करने लगा। मैं अपने को जांच किया कि निद्रा में हो कर स्वप्न तो नहीं देखता हूं? मैं बिन्ती करते करते निद्रा में आ गया तो मैं स्वप्न से ईश्वर को खोजने के लिये उत्तर दिशा को जा रहा हूं। कोई रास्ता भी नहीं है परती टांड़ ही में होके जाता हूं। बहुत दूर में मनुष्य के शरीक बैठा हुआ सिर को झुकाये हुए मेरे ओर पीठ किया है। जैसे मैं उस को देख पाया तैसे मेरा पैर आगे को फिर नहीं बढ़ा। तब मैं वहीं पर खड़े हो कर बहुत गिड़गिड़ा कर बिन्ती करने लगा। तौस पर भी वह मेरे तरफ नहीं देखा। और मेरे बायां ओर एक नयां सड़क बना हुआ है। और बहुत से लोग जिन के धोती पगड़ी और ओढ़े हुए चादर पाले की नाईं सफेद हैं। वह सड़क दखिण की ओर से ~~जा कर~~ उत्तर को जा कर उस मनुष्य के आगे घूम कर अन्त हुआ है। उन लोग ईश्वर के पास जाने के लिये परती टांड़ से उस सड़क में जाने के लिये उत्तर जा रहे हैं। मैं उन के संग भी जाने नहीं सकता हूं। जो भी ईश्वर मेरे तरफ नहीं देखा तौ भी मेरी बिन्ती को सुन कर मुझ पर दया की। और जिस चीज से मैं दबा हुआ था वह चीज मुझ पर से धीरे धीरे ऊपर को उठ जा रहा है। तब मैं कुछ हलका मालुम करने से जाग गया। तो वह सफेद चीज मुझ से एक हाथ तक ऊपर को उठ गया है। तब धीरे धीरे से बहुत ऊपर चला गया, और सब तितर बितर हो गया। तब मैं जाग कर पहले तो सोचे बैठाया कि मैं पाप के बोझ से दबा हुआ हूं। फिर मैं निद्रा में आ गया तो स्वप्न में देखता हूं। कि मैं एक घना जंगल के पहाड़ में खो गया हूं और एक आदमी मुझ को मार डालने के लिये इधर से उधर और उधर से इधर दौड़ा रहा है। मैं बहुत मस्कील से उस के पंजा से निकल गया। तब मैं दखिण की ओर भाग जा रहा हूं। और घांस का जंगल और साल

झाड़ का जंगल है जिस में जाना भी बहुत कठिन मालूम होती है।
तब उसी समय मेरे एक खास मित्र उत्तर से दक्षिण की ओर जा रहा है ~~उस के~~
और उस के आगे एक तखता पूर्व पश्चिम गड़ा हुआ था उसी में वह
जा कर बैठा। तो मैं उस को देख कर बहुत खुशी हुआ और मैं उस के निकट
जाने लगा। तो वह मेरे पहुँचने के पहले ही उठ कर पूर्व की ओर जाने लगा।
और वह मुझ को कहा कि मेरा दो लड़के तुम्हारे लिये ही तेरे पास आते
हैं। और मैं उस के पीछे हो लिया। तब मैं जाग कर उस का टीका किया
कि ईश्वर मुझ को खोजता है। मैं पापी होने के कारण ईश्वर के पास
पहुँचने नहीं सकता। तखता जो है यीशु मसीह का कलीसा है।
वह सफेद चीज जो है सो ईश्वर की दया है। दो लड़के जो हैं सो यीशु
मसीह और पवित्र आत्मा है। और उसी दिन से मेरे दिल में ख्रिस्तान
होने का लालसा हुआ। मैं ने विचार किया कि भूतों को सेवा करते
अशुद्ध हो गया हूं और मेरा घर भी अशुद्ध हो गया है। इस लिये जब तक
खृस्तान लोग मेरे घर को नहीं घुसेंगे तब तक मेरा घर शुद्ध नहीं हो
सकता है। इस लिये मैं चिड़िया के खृस्तान भाई बहिनों को बुलाने कहा।
तो वे मेरे तीन भाइयों से मेरे बपतिस्मा के समय गड़बड़ हो जाने के
भय से चाईबासा या राँची के बड़े गिरजा घर में बपतिस्मा होने का
सलाह दिये। मैं उन को जवाब दिया कि क्या ईश्वर बड़े गिरजा घर
में बैठा हुआ है और कहीं दूसरे जगह में नहीं सुन सकता है
चाहे नहीं देख सकता है? ईश्वर सब जगह में देख सकता और
सुन सकता है। इस लिये मेरा और मेरे परिवारों का बपतिस्मा मेरे
घर ही में होना चाहिये। तो भी वे मेरे घर में बपतिस्मा देने को
राजी नहीं हुए। इस लिये मैं लचारी बस में हो कर आभाइपुर
मन्डली के छोटे गिरजा घर में बपतिस्मा लेने को राजी हो गया।
जो मेरे गाँव से डेढ़ मील दूरी पर है। तो भी मैं उन को मेरे घर
आने के लिये जिद्द किया। तो वे लचारी बस में हो कर तीन
भाई और तीन बहिन अपना चावल दाल ले कर आना पड़ा।
क्योंकि मैं बहुत गरीब था। और ता: १६-५-१९५३ ई. में
लोआराम के पादरी सुलेमान सोय के हाथ से आभाइपुर मन्डली
के गिरजा घर में सब परिवार सहित बपतिस्मा पाये। और मुझ
को डेढ़ ही वर्ष के बाद जोइन्ट मिशन बोर्ड में प्रचारक का काम
मिली। ख्रिस्तान होने के बाद हम लोगों को निज भाइयों की ओर से
गाँव के जाति भाइयों की ओर से अन्य जातियों की ओर से ग्राम पंचायत

की ओर से और वेलफेयर की ओर से मिला निन्दा और सताहार
मिला। वेलफेयर ग्राम पंचायत को ले कर धमकी देने आता था,
मेरा मंझिला भाई कभी कभी तीर धनु और बलुआ ले कर मार डालने के लिये आता
था। और गाँव के लोग कुँआ में भी पानी डुबाने नहीं देते थे। और मेरे
घास बास की काम में भी कोई नहीं आते थे। मुझ को इन से
बहुत होशियारी से लड़ना पड़ा। और वेलफेयर को पादरी डी. हेमरोम
और बस्ता साहेब के पास रिपोर्ट कर दिया। वे वेलफेयर और
डिस्ट्रीक वेलफेयर को रगड़ाये तब अब सब कोई खमस गये हैं।
अब हम खुशी से रहते हैं सब सताहार दुर हो गया है खुशी से प्रचार
कर रहा हूँ। और बच्चों को भी ईश्वर की दया से कोई 6 वाँ क्लास तक
कोई 8 वाँ क्लास तक पढ़ = ~~रहा~~ रहे हैं। और हम सब ख्रस्तान होने
से बहुत खुशी हैं। हम लोग चाहते हैं कि सब सन्ताल लोगों
को ईश्वर के पास लावें। ईश्वर हम लोगों की इच्छा को पुरी करे।

मैं प्रभु यीशु मसीह का दास।

जोहानेस कुमार हेमरोम

गाँव- डुमरिता- पो. उरलिया- थाना- मनोहरपुर- जि: सिंहभुम

बिहार - ता: २२-२-१९६२

बोंगा जोंगा मण्डली का

प्रचारक का जिवान चरित्र

गांव) मकोड़ कोचा = थाना = मनोहरपूर - जिला - सिंहभूम (बिहार) के राहने वाला हुं।

मेरा जन्म दिन बिफे को हुआ था ता: १९-९ सोन को बोंगदा: गांव-थाना बसिया जिला नांगपूर - मेरा पिता का नाम मातसक तोपनो प्रचारक का काम करता था मेरा मांचा का नाम ख्रुस्त लुईश गोहार थो कोरकेरा हुत दोनों का पहिला लाड़का आप का बिश्वस्त आनन्दमसीह तोपनो प्रचारक १९-१२ से १९-१९ ताक बनुमदा: देहात इस्कूल में था १९-२० से १९-२३ ताक कारो मड़ो यु: पी इस्कूल में थे यु:पी देकार यु:पी पास हुं। वहां से मेरा मांचा देहान्त होने से मुझ को घर आना पाड़ा कुच्छ दिन बाद सरीरिक जिवन के लिये मैं १९-२४ से १९-२८ ताक में आसाम गाया वहां से घर आया तो मेरा सादी का बान्दोबास्त मेरा पिता करने लागा और मेरा बान्दोबास्त कानारोवा का मेन आनन्दमसीह बारजो का बेटी दुलारी बारजो से सादी हुआ इसने यु: पी पास किई है। हाम दोनों का सादी लाचा केल्स पेरिश मे हुआ हाम सरीरिक जियन के लिये दोनों फिर ३२ में आसाम गाये १९-३२ से १९-४१ ताक हुमार दोलोग चाय बागान में काम करने के समैः हो में ४ता: लाइन में राहने के संडे हांग पेरिश का ४ता: लाइन में एक नाया मण्डली खोला दिया मेरा मेयाद पूरा हुआ तो छोड़ना पाड़ा वहां होसे ६ बारस प्रचारक काम किया वाहां होसे मैं दुसरा महां जुद्द मे बारमहां रांगून सिंगापूर महां जुद्द में गाया था आगरेजि सरकार की ओर से वहां पर भारी लाड़ाई हुवी थो वहां से मैं बांच कार बोल्त वाओं के पास लाउट आया १९-५० से १९-५८ ताक लखिमपूर जिला में आर खान्ड पारटी का लिडार था १९-५९ ताक मे मैं घर लाउट आया और गांव में खेती बाड़ी करता था मेरा सोच और बिचार कि मैं इतना दुख और खतरा से मुझको परमेस्वर पिता बांचाया इस कारण प्रभु का शिस बाने और काम करे १९-६० से मैं फिर तेदेरा बारू में प्रभु का धर्म प्रचार करना सुरु किया था प्रभु का दाया हुआ कि प्रभु ने प्रभु के भेड़ चाराने के लिये १९-६२ पहिला आगस्त से धर्म प्रचार बोंगा जोंगा मण्डली में जोईन्ट मिशन बोर्ड में करते आही आते हैं। मेरा लाड़के ४ हैं लाड़की ३ हैं

आप का बिश्वस्त

आनन्दमसीह तोपनो

बोंगा जोंगा मण्डली

ता: ३१. ४-६३

पावे रेंभ जो: जे: पो: लिग्गा
जोइन्ट मिशन बोर्ड डैइरेकर सहाव
सि: इ: एल: चर्च चाईबासा
सिंहभूम (बिहार)

जीवन चरित्र,

मैं जुनास सँगा, गाँव रैबेड़ा, थाना तोरपा, जिला राँची का रहने वाला हूँ। मेरा जन्म ता० ५-३-१९४० को तुःजुर पेरिश रैबेड़ा मंराङली में हुआ था। मेरे पिता का नाम उफलान सँगा, माता का नाम बड़ामनी सँगा। मेरे पिता जी १९५८ ई० से १९६२ ई० तक बुड़जू सिनोड़ तुःजुर पेरिश में प्रचारक का काम किया, उन दोनों का पहिला बेटा मैं ख्रिस्त जुनास सँगा हूँ। मैं १९४४ ई० से १९४८ ई० तक करीमटी ईलाका पेरिश लोबाराम मिशन स्कूल में ५वाँ वर्ग तक शिक्षा लिया। १९४८ ई० १९५३ ई० तक बानो थाना, डिस्ट्रीक बोर्ड स्कूल में ६वाँ वर्ग से ९वाँ वर्ग तक शिक्षा लिया। १९५४ ई० में घर की आर्थिक अवस्था खराब होने के कारण स्कूल छोड़ कर १९५५ ई० तक घर में गृहस्त का काम किया। १९५६ ई० से १९५८ ई० तक मैं जंगल में काट मुन्शी का काम किया। १९५९ ई० में तुःजुर पेरिश डिन्डुंग मराङली के मसकलान + मरियम तोपनो: की बेटी ख्रिस्त शिलवन्ती तोपनो: से मेरी शादी हुई, उन की शिक्षा चाईबासा लुथेरन स्कूल से ८वाँ वर्ग पास की है। १९६० ई० से ६१ ई० तक मैं सिंहभुम जिले के कोड़ाकेल लोअर स्कूल में प्राईवेट शिक्षक का काम किया। १९६२ ई० में घर में रह कर मराङली का सहायक प्रचारक - ओ सन्डे - दृढ़ापन क्लास का काम करते आया। मेरे पास एक लड़का और एक लड़की है। १९६३ ई में ईश्वर पिता की आशीर्वाद हुई, १९६३ के जनवरी से चक्रधरपुर क्षेत्र के बोंगा जंगा जोईन्ट मिशन बोर्ड में, प्रभु का काम, (प्रचारक काम) में ईश्वर पिता मुझे बुला लिया और मैं काम करते आया हूँ।

आप का विश्वस्त : प्रचारक जुनास सँगा
बोंगा जंगा क्षेत्र
ता० ३-३-६३ ई०

श्रीमान

जे॰ जे॰ पी॰ तिगा डैरेक्टर

जोईन्ट मिशन बोर्ड

जी॰ ई॰ एल चर्च चाईबाशा

(सिंहभूम) बिहार

— —